Volume : 4 | Issue : 9 | Sept 2015 • ISSN No 2277 - 8179

Research Paper

Journalism

KEYWORDS : युवा, सोशल मीडिया, प्रयोग एवं व्यवहार परिवर्तन।

# Social Media se Badalte Yuva
# सोशल मीडिया से बदलते युवा

**Dr. Subodh Kumar**

Associate Professor & Convener, Department of Journalism Vardhman Mahaveer Open University, Kota (Raj.)

## ABSTRACT

सूचना संचार प्रौद्योगिकी के दौर ङ्कें क्या बच्चे बड़े और बूढ़े सभी इसके आदी हो गए हैं। सोशल ङ्कीडिया ङ्कंच सभी को लुभा रहा है। सोशल ङ्कीडिया पर दिनचर्या और विचारों को टेक्स्ट, ऑडियो और वीडियो के ङ्काध्यङ्क से साझा करने की अनोखी प्रथा का जन्ङ्क हो चूका है। देश के प्रधानङ्कंत्री से लेकर आङ्क व्यक्ति सभी सेल्ङ्की के कायल हो गए हैं। ट्वीटर के १४० शब्द ङ्कानो बाण का काङ्क करने लगे हैं बातों का पलटवार इस तरह का है कि आए दिन कोई न कोई ट्वीटर पर विवादित बयान देकर सुर्ख़ियों ङ्कें छा जा रहा है। यदि सभी सोशल ङ्कीडिया साइट्स की बात करें तो भारत ङ्कें ङ्के सबुक यूजर्स सबसे ज्यादा हैं। यदि एप बेस्ड सोशल नेटवर्किंग की बात करें तो वाट्स एप पर बड़ी भीड़ नजर आती है। ट्वीटर भी बड़ी साइट्स ङ्कें सुङ्कार है पर ङ्के सबुक से पीछे है और उसकी वजह सिर्ङ्क यह है कि इसकी सीङ्काएं तय हैं। हालांकि ट्वीटर पर सेलिब्रिटीज की भरङ्कार है और कहें तो नेताओं और अभिनेताओं का विशेष अङ्का ट्वीटर ही है। सोशल ङ्कीडिया के जरिए संचार को गति तो ङ्किली है साथ ही आङ्क व्यक्ति की अभिव्यक्ति को ङ्कंच भी ङ्किला है पर यदि किसी भी तकनीक के सकारात्ङ्क पहलू होते हैं तो उसके नकारात्ङ्क असर भी देखने को ङ्किलते हैं। इसी कड़ी ङ्कें अगर चर्चा करें तो सोशल ङ्कीडिया जहां एक तरङ्क लोगों की अभिव्यक्ति बन रहा है वहीं इसके कई ऐसे उदाहरण भी सङ्कने आए है जिससे यह बात उभर कर आई है कि सोशल ङ्कीडिया लोगों को अङ्किङ्क की तरह डस रही है और इसके अत्याधिक प्रयोग से ङ्कानसिक तनाव और लोगों के व्यवहार ङ्कें परिवर्तन हो रहा है। वर्चुअल सत्य कब हकीकत लगने लगता है पता ही नहीं चलता है। लोग हकीकती दुनिया ङ्कें कङ्क और वर्चुअल ङ्कीडिया पर ज्यादा सहज नजर आते हैं इस दौरान सोशल ङ्कीडिया के प्रयोग से उनके व्यवहार ङ्कें परिवर्तन हो जाता है और वे इस बात से अनजान बने रहते हैं। इसी क्रङ्क ङ्कें देश के युवा भी सोशल ङ्कीडिया के प्रयोग को आत्ङ्कसात कर रहे हैं। आंकड़े कुछ इस प्रकार के हैं कि भारत ङ्कें कुल इंटरनेट यूजर्स ङ्कें लगभग ७० प्रतिशत यूजर्स युवा हैं और इनङ्कें से ८० से ९० प्रतिशत तक यूजर्स सोशल ङ्कीडिया से जुड़े हुए हैं। सोशल ङ्कीडिया ङ्कें युवाओं को किस तरह से आकर्षित किया है और क्यों इतनी संख्या ङ्कें युवा इस ङ्कंच के ङ्काध्यङ्क से खुद को जोड़ रहे हैं यह बात और करने वाली है। प्रस्तुत शोध पत्र ङ्कें सोशल ङ्कीडिया के प्रयोग से युवाओं के व्यवहार ङ्कें आ रहे परिवर्तनों को जानने का प्रयास किया गया है विभिन्न शोधों से प्राप्त जानकारी के विश्लेष्ण के उपरांत बात साङ्कने आई है कि सोशल ङ्कीडिया का अत्याधिक प्रयोग युवाओं ङ्कें ङ्कानसिक तनाव उत्पन्न कर रहा है जिससे उनके व्यवहार ङ्कें परिवर्तन हो रहे हैं।

### भूमिका

तकनीक का बढ़ता दायरा और संचार यंत्रों की विकसित होती नई खेप ने आम लोगों तक सोशल मीडिया की पहुंच बना दी है| स्मार्टफोन हों या लेपटॉप सभी आज आम व्यक्तियों के दैनिक जीवन का हिस्सा बन गए हैं| सुबह से शाम तक व्यक्ति लगभग पचास से सत्तर फीसदी समय इन उपकरणों के प्रयोग में गुजार रहा है| यह बात चौकाने वाली है पर यदि आप अपनी जीवन शैली पर नजर डालें तो इस बात से इंकार नहीं कर सकते हैं| उदाहरणार्थ सुबह का अलार्म हो या दोस्तों के शुप्रभात सन्देश या लोगों के फ़ोन काल्स हों या ई-मेल या आपके द्वारा अमेजन एवं स्नैपडील जैसी वेबसाइट्स से शॉपिंग या वायुयान, रेल एवं बस की ऑनलाइन टिकटिंग या ऑफिस में वर्क आदि सभी इसी तकनीक का हिस्सा हैं| इसी में सोशल मीडिया का प्रयोग भी शामिल है| सोशल मीडिया के जरिए संचार को एक नया आयाम मिला है विश्व के किसी भी कोने में तुरंत सूचना पहुंचाने में सोशल मीडिया सबसे बड़े माध्यम के तौर पर पहचान बना चुका है| भारत की बात करें तो वर्तमान में लगभग 36 करोड़ इन्टरनेट यूजर्स हैं तथा अमेरिका और चीन के बाद भारत इस दौड़ में तीसरे स्थान पर है| फेसबुक यूजर्स की बात करें तो अमेरिका के बाद भारत दूसरे पायदान पर है| इन आकड़ों में एक बात पर गौर किया जाए तो सोशल मीडिया यूजर्स की विश्व लिस्ट में सबसे ज्यादा यूजर्स युवा हैं| युवाओं की सोशल मीडिया पर बढ़ती तादात एक तरफ तो सकारात्मक पहलुओं को उजागर करती है तो दूसरी ओर इसके प्रयोग से युवाओं में उत्पन्न हो रहे मानसिक तनावों के प्रति चिंतित भी करती है| सोशल मीडिया का प्रयोग युवाओं में एक लत की तरह विकसित हो रहा है जो उनके व्यवहार को प्रभावित कर रहा है|

### सोशल मीडिया और युवा

सोशल नेटवर्किंग साइट्स के समूह ने सोशल मीडिया की संरचना को आधार प्रदान किया। सोशल मीडिया नाम से ज्ञात हो जाता है कि समाज की मीडिया यानी जिसमें विचारों और सूचनाओं का संप्रेषण स्वयं समाज करे। यह लोगों को आपस में जुड़ने व वैचारिक आदान प्रदान करने का अनूठा माध्यम प्रदान करती है। आज विश्व की हजारों किलोमीटर्स में फैली आबादी एक क्लिक से एक दूसरे के आमने-सामने आ जाती है और व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों ही प्रकार से अपने विचारों को व्यक्त कर पाती है। आज सूचना प्रौद्योगिकी ने सभी सीमाएं लांघ कर अपने को विश्व पटल पर सर्वोत्तम स्थान प्रदान करा दिया है। आज समाज के छोटे से छोटे मुद्दों को विश्व स्तर का मंच प्राप्त है। सोशल मीडिया ने लोगों की दिनचर्या में अपना स्थान बना लिया है आज लोग इसे जीवन का अहम हिस्सा मानने लगे हैं। यह उन्हें लोगों से जोड़ कर विश्व स्तर पर पहचान देती है। यह माध्यम आज के युग का सबसे लोकप्रिय माध्यम बनता जा रहा है। वेब जगत में सोशल मीडिया ने अपनी अलग पहचान बना ली है। आज बहुत से लोग सिर्फ सोशल मीडिया से जुड़ने के लिए ही वेब की दुनिया में प्रवेश करते हैं। अब तो ऐसा भी कहा जाने लगा है कि सोशल मीडिया के बिना वेब अधूरा है। सोशल नेटवर्किंग प्रदान करने में फेसबुक, ट्वीटर, गूगल प्लस, ऑरकुट, लिंक्ड-इन तथा यू-ट्यूब आदि नेटवर्किंग साइट्स है। भारत में फेसबुक यूजर्स की तादात अमेरिका के बाद दूसरे स्थान पर है। इसमें युवाओं की संख्या सबसे अधिक है।

वर्चुअल रियलिटी की यह दुनिया युवाओं को आकर्षित करने में सक्षम रही है। इसके जरिये वे अपने विचार व्यक्त करने के साथ-साथ फोटो तथा वीडियो सभी को साझा कर पाते है। यहां पर जितनी भी सामग्री उपलब्ध है उसे पसन्द व नापसन्द कर सकते हैं साथ ही साथ उस पर टिप्पणी भी कर सकते हैं। इस तरफ वे इससे जुड़ कर बहुत से लागों से इंट्रेक्ट कर सकते हैं, जिनको वे सोशल मीडिया के मंच से आमंत्रित कर अपने खाते में जोड़ते हैं या उनसे जुड़ते हैं। सोशल मीडिया से जुड़ने के लिए आपके पास ई-मेल खाता होना आवश्यक जिसे आप सोशल मीडिया में पंजीकृत कर अपना सोशल नेटवर्किंग खाता बना सकते हो, और वर्चुलिज्म की अनोखी और स्वतंत्र दुनिया में अपने विचार, डिजिटल फोटोग्राफी और विडियोज को इस के माध्यम से लोगों तक प्रेषित कर सकते हो। यहां स्पेस की कोई कमी नहीं है बस आपके पास *सामग्री* होनी चाहिए| यह आप को भावनात्मक रूप से आकर्षित कर आपके जीवन का अहम हिस्सा बनने की अपार क्षमता रखती है। 'Toward an Integrated Conceptual Framework of Research in Teen Online Communication' इस शोध अध्ययन में बात सामने आई है कि सोशल मीडिया के उपयोग से युवाओं में मानसिक परिवर्तन नजर आ रहे हैं| सोशल मीडिया के प्रयोग उनके व्यवहार और मनोवृति में परिवर्तन लाता है| सोशल मीडिया में वर्चुअल दोस्तों का संसार व्यक्ति को हकीकत लगने लगता है और व्यक्ति घंटों इन दोस्तों के साथ विचारों और संदेशों का आदान-प्रदान करता रहता है जिससे व्यक्ति की दिनचर्या भी प्रभावित होती है|[1]

युवाओं के लिए यहां नित नये दोस्तों का वर्चुअल संसार है जिसमें सीमाओं की कोई सीमा नहीं है। पूरा विश्व एक कमरे में बन्द नजर आता है। किसी पहचान के बगैर वह अपने को इस संसार से जुड़े लोगों से अलग नहीं समझाता तथा उनसे अपने बारे में खुल कर बातचीत करने में हिचकिचता नहीं है। इसकी संदेश भाषा ने भी अपने को बहुत ही अनोखा बना रखा है, जो मनो मस्तिष्क पर गहरी छाप बना लेती है। बातचीत के दौरान यूजर्स कोड का प्रयोग कर संदेश को सूक्ष्म बना देते हैं, जिससे वे कम से कम शब्दों में अपनी बात कह पाते हैं साथ ही संदेश की सार्थकता में भी कोई कमी नहीं आती है। युवाओं के लिए यह अनुभव उनके मस्तिष्क पर अपनी छाप स्थापित कर उनको भावनात्मक तौर पर अपने से जोड़ लेता है। 24X7 चलने वाली ये दुनिया हमेशा ताजा रहती है जिसका साक्षात्कार करने के लिए वे कई-कई घंटे या दिन में कई बार अपनी मौजूदगी इस माध्यम में दर्ज कराते हैं। 'Unraveling the Web : Adolescents and Internet Addiction' शोध अध्ययन में कहा गया है कि इन्टरनेट का प्रयोग एक लत की भांति होता है जो इसका आदी बना देता है और इसका प्रयोग न करने पर यह मानसिक तनाव उत्पन्न करता है|[2] यदि इसी से सम्बंधित एक उदाहरण आम जिन्दगी से जुड़ी तकनीक का लें जैसे यदि किसी व्यक्ति का मोबाइल फ़ोन घर पर छूट जाए तो वह व्यक्ति दिन भर परेशान रहता है कि किस-किस ने काल की होगी किस-किसका मैसेज आया होगा इत्यादि बातें पूरा दिन उस व्यक्ति के दिमाग में घुमती रहती है और परोक्ष रूप से मानसिक तनाव को जन्म देती है ठीक उसी प्रकार इन्टरनेट या सोशल मीडिया का प्रयोग एक लत की भांति बन कर परोक्ष रूप से मानसिक तनावों को जन्म देता है| जुड़ाव का सिलसिला इतना प्रभावी होता है कि मानसिक रूप से इसका आदी बना देता है।

### निष्कर्ष

सोशल मीडिया की रीच जैसे जैसे बढ़ रही है वैसे ही लोग उससे जुड़ रहे हैं| युवाओं में सोशल मीडिया के प्रति सकारात्मक जुड़ाव नजर आ रहा है यही कारण है कि आज सोशल मीडिया का प्रयोग करने वालों में लगभग 70 प्रतिशत यूजर्स युवा हैं| यही वजह है कि युवाओं की भीड़ नित सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर बढ़ रही है| शोध अध्ययन में यह बात सामने आई है कि सोशल मीडिया और इन्टरनेट का प्रयोग लोगों में लत की भांति विकसित हो रहा है| इसके अधिक प्रयोग से युवाओं में मानसिक तनाव उत्पन्न हो रहा है| साथ ही साथ उनके व्यवहार में भी परिवर्तन महसूस किए जा रहे हैं| सोशल मीडिया की 24 घंटे चलने वाली दुनिया के प्रयोग से युवाओं की दैनिक जीवन की दिनचर्या प्रभावित हो रही है| कई शोध अध्ययनों में इस बात का जिक्र है कि सोशल मीडिया के प्रयोग से युवाओं में मानसिक असंतुलन बढ़ रहा है, जिससे उनके व्यावहारिक जीवन में कई परिवर्तन नजर आ रहे हैं|

## REFERENCE

**पुस्तकें** | | **1.** शर्मा, विजय (2011). आधुनिक पत्रकारिता प्रभाव एवं कार्य. जयपुर: इशिका पब्लिशिंग हाउस। | **2.** चतुर्वेदी, जगदीश्वर (2013). मीडिया समग्र (भाग-3) ज्ञान-क्रान्ति और साइबर संस्कृति. दिल्ली: स्वराज प्रकाशन| | **3.** जोशी, शालनी, जोशी, शिवप्रशाद (2012). वेब पत्रकारिता नया मीडिया नये रूझान. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड| **4.** सिंह, सुरजीत (2012). मीडिया अचीवर्स. जयपुर: हार्समैन पब्लिकेशन| | **5.** कुमार, राकेश (2009). इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं साइबर संचार पत्रकारिता. नई दिल्ली: श्री नटराज प्रकाशन | **6.** डॉ. सोनी, सुधीर (2009). नवीन मीडिया प्रविधियां . जयपुर: बुक एनक्लेव| | **7.** कुमार, सुरेश (2004). इंटरनेट पत्रकारिता. नई दिल्ली: तक्षशिला प्रकाशन | | **8.** Saxena, Ambrish (2012). Issue of communication development and society. Gera, Gagan (Eds.) Social Media Networking and concept of International Citizenship (P.P.163-167). New Delhi : Kanishka Publisher, Distributors. | **9.** Mathur, K, Prasant (2012). Social Media and Networking Concept, trend and dimensions. New Delhi : Kanishka Publisher, Distributors. | **10.** Gupta, Om & Jasra Ajay S. (2002). Information Technology in Journalism. New Delhi : Kanishka Publishers, Distributors. | | **शोध पत्र** | **1.** Lenhart, Amanda, Purcell, Kristen, Smith, Aaron, Zinckuhr, Kanthryn. Social media among youth Adults (Social media and mobile internet use among teens and young adults.) (Feb 2010) Pew Internet & American Life Project.http://www.pewinternet.org/Reports/2010/Social-Media-and-Young-Adults.aspx | **2.** Bhawna, S (Jan 2014). Impact of Media and its Effects on Youth. **IJAR : Volume : 4 | Issue : 1 .** | **3.** Zheng, Robert, Burrow-Sanchez, Jason, Drew Clifford. Adolescent Online Social Communication and Behavior: Relationship Formation on the Internet. (Eds). Z. Zheng, Robert, J. Burrow-Sanchez, Jason, Donnelly Stephanie, E. Call, Megan, J. Drew, Clifford. Toward an Integrated Conceptual Framework of Research in Teen Onlinen Communication. Hershey, New York: Informatlon sclence reference.[1] **4.** Zheng, Robert, Burrow-Sanchez, Jason, Drew Clifford. Adolescent Online Social Communication and Behavior: Relationship Formation on the Internet. (Eds). Widyanto, Laura, Mark, Griffiths. Unravelling the Web:Adolescents and Internet Addiction. Hershey, New York: Informatlon sclence reference.[2]

[1]**वेबसाइट्स** | **1.** http://en.wikipedia.org/wiki/Social_networking_service(5/08/15) | **2.** http://en.wikipedia.org/wiki/New_media(6/08/15) | **3.** http://www.pewinternet.org/Reports/2010/Social-Media-and-Young-Adults.aspx(8/08/15)